eY;ijd f’k{kk ,oa f’k{kd izf’k{k.k

डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह
अकेडमिक काउन्सलर,
इग्नू, बदाँयू (यू.पी.)

नीलम
सहायक प्रोफेसर,
ज्योति कॉलेज ऑफ मैनेजमेण्ट, साइन्स एन्ड टैक्नोलॉजी, बरेली (यू.पी.)

f. lkjka'k

संसार मानवीय मूल्यों की कमी के कारण अत्यन्त गंभीर संकट की स्थिति के स्पष्ट लक्षण परिलक्षित हो रहे हैं। मानव के व्यक्तित्व को संवर्धित करने में मूल्य ही एकमात्र सशक्त साधन है। प्राचीन काल की शिक्षा परंपरा में मूल्यों को समाविष्ट कर आचार्य शिष्यों को शिक्षा प्रदान किया करते थे, परन्तु वर्तमान समय में मूल्यों के प्रति इतनी गंभीर अवहेलना प्रदर्शित की गई है कि उभरते छात्र व शिक्षक दोनों में चारित्रिक कलुषता स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रही है। समाज में भी इसी नैतिक मूल्य भावजन्य चारित्रिक स्खलन के कारण अनेकानेक समस्याएँ दिन–प्रतिदिन दिखाई दे रही हैं। प्रस्तुत लेख के माध्यम से मूल्यपरक शिक्षा व शिक्षक प्रशिक्षण के प्रति ध्यान आकर्षित कराने हेतु कुछ विचार प्रकट किये गए हैं जो अधुना शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए अत्यन्त प्रासंगिक व युक्तिसंगत प्रतीत हो रहे हैं तथा जिससे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को एक संतुलित व सुव्यवस्थित आयाम प्रदान करने की एक दृष्टि प्राप्त हो सकें।

मूल्य एक अमूर्त सम्प्रत्यय है जिसका सम्बन्ध मनुश्य के भावात्मक पक्ष से होता है और जो मानव के व्यवहार को नियंत्रित व निर्देशित करता है। व्यक्ति की जीवनशैली, क्रियाशैली, क्रियाविधि, विचार प्रक्रिया व अन्य महत्त्वपूर्ण संदर्भों में मूल्यों का अपेक्षित महत्त्व है। मूल्य वे हैं जो अभीष्ट हैं, जिन्हें किसी भी व्यक्ति द्वारा किसी भी समय पसन्द किया जाये, पुरस्कृत किया जाए, सम्मानित किया जाए। दार्शनिक दृष्टिकोण से मूल्य विद्वतापूर्ण मान्य प्रमाण है कि क्या वांछनीय है, चाहे वह व्यक्त हो अथवा अव्यक्त, इसके आधार पर ही विकल्प बनाए जाते हैं एवं निणर्य लिए जाते हैं जो कार्य हेतु प्रेरित करते हैं। ekl yks ने उद्धृत किया है कि ''व्यक्ति को विटामिन व खनिज लवणों के समान ही जीवन दर्शन व मूल्यों की आवश्यकता है। वह व्यक्ति जिसके मूल्यों की परितृप्ति नहीं होती उसका जीवन निरर्थक होता है।'' fQyid egkn; के अनुसार–''मूल्य मानक रूपी मानदण्ड हैं जिसके आधार पर मनुश्य अपने सामने उपस्थित क्रिया विकल्पों में से चयन करने से प्रभावित होते हैं।''

वैश्वीकरण के इस युग में चारों ओर से 'मूल्य परक शिक्षा' की माँग आ रही है, जिसका मूल कारण हमारे समाज में मूल्यों की अवधारणा में बदलाव और मूल्यों का क्षरण है। आज समाज भौतिकता के आवरण में लिपटा हुआ है। यह *ohjHkksX;k olq/kjk* आंतरिक कलह, दुर्व्यवस्था, साम्प्रदायिक भेदभाव, जातिवाद आर्थिक विशमता, क्षेत्रवाद, आन्तरिक आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि संर्कीणता की अग्नि में जल रही है। यह भारत भूमि में रामकृष्ण, भिष्म पितामहा, बुद्ध, महावीर, विवेकानन्द और गाँधी का जन्मदात्री होते हुये भी जितना नैतिक अघिक पतन और मूल्यों का क्षरण भारतवर्श में हुआ है। उतना किसी अन्य राष्ट्र में नहीं हुआ। आज की नई भारतीय पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के कुप्रभाव से ग्रसित है। भारतीय जीवन मूल्य ध्वस्त हो रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में मूल्य परक शिक्षा की अनिवार्यता अपरिहार्य है। यदि हम ऐतिहासिक परम्परा को लें तो भारत की महान सांस्कृतिक विरासत के स्थायी मूल्य भारत के बुद्धिजीवी वर्ग को प्रेरणा देते रहे हैं। चाहें उपनिशदों के मूल मंत्र *pjSofr&pjSofr* को ले या बुद्ध के 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' सिद्धान्त को ले या नानक, कबीर आदि सन्तों की करूणा

और समतामूलक, जनवादी, मानवतावादी, क्रानितकारी वाणी को ले या *o.ko tu rk r.k dfg, t ih ijkb tk.k j* के उद्बोधन को लें या निकट इतिहास से गाँधी के इस विचार को लें कि 'प्रत्येक दुःखी प्राणी के आँसू पोंछना ही हमारे जीवन की सार्थकता है।' तो सदियों पुरानी इस परम्परा से जनसाधारण में अधिक से अधिक मूल्यों को विकसित करने की प्रेरणा मिल सकती है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दों मे;

u fo/k;k lk[;: ujk.kk tk;r /kpoe A
vrk /kekFk ek{kH;k fo/kkH;kl lekpjr AA

अर्थात विधा के बिना मनुश्य या विधार्थी कुण्ठाग्रस्त तथा अराजक हो जाता है। सुखी और स्वास्थ्यपूर्ण जीवन के लिये 'विधा' (मूल्य परक शिक्षा) की आवश्यकता है। विधाभ्यास द्वारा ही धर्म और मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है।

स्वतन्त्रता के उपरान्त विभिन्न आयोगों ने भी 'मूल्य परक शिक्षा' के प्रति अपना ध्यान आकर्शित किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति –1986 ने भारतीय समाज में सामान्यतः विधार्थी व नवयुवक समाज में आधारभूत नैतिक मूल्यों के क्षरण के प्रति चिन्ता व्यक्त की है। vkpk;l jkeefr lfefr ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पुनरावलोकन (1992) करते हुये कहा है कि ''विश्वव्यापी स्तर पर बुनियादी नैतिक मूल्यों का पतन द्दष्टिगोचर हो रहा हे। यह द्दश्य भारतीय सन्दर्भ में और भी मार्मिक तथा चिन्ता जनक है क्योकि हम एक महान सभ्यता और उच्च सांस्कृतिक धरोहर के उत्तराधिकारी रहे हैं। अतः शिक्षा ही हमारे लिये वह माध्यम है, जिसके द्वारा भारतीय समाज में मूल्यों के क्षरण को रोका जा सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने कार्यक्षेत्र में शिष्ट एवं मूल्यों द्वारा पोशित आचरण से अपने आसपास के लोगों को प्रेरणा देने का कार्य कर आचार्य हो सकता है। शास्त्रों में वर्णित कर्त्तव्यनिष्ठता का सिद्धान्त यही है। एक अध्यापक, कर्त्तव्यभाव से शिक्षण करे, वकील कर्त्तव्यभाव से वकालत करे तो मूल्य का स्वरूप दर्शनशास्त्र की विश्लेशणात्मक अन्वेक्षण सीमा से बाहर आकर अनुप्रयोगात्मक बन सकता है। विश्व के जिन महापुरुषों का नाम हम सम्मान से लेते हैं उनका जीवन कर्त्तव्य एवं मूल्यनिष्ठा से परिपूर्ण था। वर्तमान युग में हमने शिक्षा तन्त्र को आर्थिक तन्त्र बनाने की भूल की है। व्यावसायिक शिक्षा की आड़ में हमने शिक्षा को व्यावसायिक तन्त्र बना डाला है और शायद यही कारण है कि हमारे उच्च शिक्षण संस्थानों से श्रेष्ठ प्रौद्योगिकीविद् तो निर्मित हो रहे हैं किन्तु देशके सुसंस्कृत नागरिक एवं श्रेष्ठ मानव का अपेक्षित निर्माण करने में हम असफल हैं।

…. f'k{kd if'k{kdk e eY;k f'k{kk dh LFkfr

मूल्य शिक्षा सम्बन्धी प्रत्येक योजना का सफल क्रियान्वयन भावी शिक्षकों के वैयक्तिक व्यवहार, शिक्षण अधिगम प्राक्रियाओं व कार्यनिष्ठा पर निर्भर करता है। अर्थात मूल्य शिक्षा का सूत्रधार और संचालक भावी शिक्षक ही हैं।

यह सत्य है कि मूल्यों के विकास में अध्यापक की भूमिका अहम होती है, लेकिन यह भी सत्य है कि जब भीड़ में सभी लोग दौड़ लगाते हैं तो कोई एक व्यक्ति अकेला खड़ा नही हो सकता अगर वह खड़ा रहना भी चाहे तो अन्य धावकों के धक्कों से कैसे बच सकेगा। सम्भव है कि वह उनके पैरों तले कुचला भी जायें। यही कारण है कि आज के अधिकतर अध्यापक अपने अध्यापन व्यवसाय के अतिरिक्त अन्य धन्धों से भी अर्थोपार्जन के प्रयास में लगे रहते हैं।

इन सब बातों का वर्णन करने का मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि अध्यापन व्यवसाय का उपहास कर रहा हूँ क्योंकि मैं स्वयं एक अध्यापक् हूँ एवं उस तथाकथिक भयानक परिस्थिति का दृष्टा, श्रोता एवं भोक्ता तीनों हूँ। दुर्भाग्यवश अनुपयुक्त शिक्षको के कारण आज हमारा शिक्षा तन्त्र पंगु हो चुका है तथा हमारे शिक्षक शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम भावी शिक्षकों में प्रवीणता, उपयुक्त अभिवृत्तियाँ व मूल्यों को विकसित करने में असफल रहते हैं। वास्तव में कुशल तथा प्रभावी शिक्षकों को तैयार करने का उत्तरदायित्व मुख्य रूप से अध्यापक शिक्षा

प्रशिक्षण संस्थान शासकत हैं तथा ये भावी शिक्षक ही समाज में जाकर मूल्य शिक्षा की अवधारण के सफल बनाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

वर्तमान में अध्यापक शिक्षा प्रशिक्षण की अवधि एवं गुणवत्ता कम होती जा रही है, जिससे शिक्षण प्रशिक्षण नीरस तथा आधारहीन प्रतीत होता है। कम समय में भावी शिक्षकों को सुयोग्य एवं सुसंस्कृत बनाना कठिन है। इस अवधि में केवल सैद्धान्तिक पक्ष पर व्यवहारिक ज्ञान की अपेक्षा अधिक बल दिया जाता है। अनेक भावी शिक्षकों को उनके कर्तव्यों की जानकारी नहीं होती, जिनका निर्वहन उनको शिक्षक बनने पर करना पड़ेगा। सभी जानते हैं कि शिक्षक राष्ट्र का निर्माता ही नही होता बल्कि उस राष्ट्र की प्रगति व उन्नति उसके अध्यापकों की गुणवत्ता पर ही निर्भर करती है।

3. मूल्य शिक्षा में शिक्षा नीतियों व आयोगों की सिफारिशें

भारत में मूल्यपरक शिक्षक प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के प्रयास स्वरूप कोठारी आयोग (1964–66) ने मूल्य परक शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा शिक्षक प्रशिक्षकों में सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास कर उनके चरित्र का निर्माण करने की संस्तुति की। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं की समय सारणी में एक या दो कालांश मूल्य शिक्षण के लिये रोके जाये जिससे प्रशिक्षितरत् शिक्षकों का व्यवहार विद्यार्थियों के समक्ष आदेशपूर्ण हो तथा अपने विषय पढ़ाते समय शिक्षक उन आदर्शों व मूल्यों को विकसित करने का भी प्रयास कर सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार मूल्य शिक्षा का अर्थ साम्प्रदायिक, हिंसक व अन्धविश्वासी बलों से मुकाबला करना है। मूल्य शिक्षा का स्थान धर्म निरपेक्षता, बड़ों का सम्मान तथा भारतीय संस्कृति का संरक्षण तथा भाईचारे की भावना को उत्पन्न करने में भी है। भारत में इस नीति की उद्घोशण के साथ ''शिक्षक–प्रशिक्षण'' के पुर्नसंगठित तथा मजबूत करने के प्रयास प्रारम्भ हुये, क्योंकि किसी भी देश में शिक्षा की गुणात्मकता वहां के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के कार्यों पर निर्भर करती है, जिसमें सबसे सार्थक कदम था शिाक्षक प्रशिक्षण संस्थानों का जिला स्तर पर उन्नयन करना। इसी प्रयास के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा सहायता प्राप्त योजना के अन्तर्गत जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना हुयी, जिनका कार्य 'स्कूल शिक्षा' के प्रत्येक स्तर पर संसाधन उपलब्ध कराना तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों के लिये शिक्षक तैयार करना एवं जो शिक्षक कार्यरत हैं, उनकी व्यावसायिक व शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करना था।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के अतिरिक्त प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में बी.एड. विभागों की स्थापना तथा उनका उन्नयन कालेज ऑफ टीचर एज्युकेशन तथा इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज के रूप में किया गया तथा इनमें प्रशिक्षण, शोध तथा पाठ्यक्रम विकास सम्बन्धी कार्यक्रमों को चलाने के लिये आवश्यक सहायता भी प्रदान की गयी्। आज शिक्षक एवं शिक्षक–प्रशिक्षक स्वंय मूल्य शिक्षण की आवश्यकता से भली–भाँति परिचित हैं। डायट जैसे संस्थान 'स्कूली शिक्षा' के क्षेत्र में मूल्यरोपण की प्रक्रिया में अधिक प्रभावशाली बन सकते हैं, अपितु यह उच्च शिक्षा का नैतिक दायित्व भी है कि मूल्य शिक्षण के मिशन को अधिक विस्तृत रूप प्रदान करें।

विश्वविद्यालय स्तर पर कई विश्वविद्यालयों में मूल्य शिक्षण को विकसित करने की द्दष्टि से सोसाइटी की स्थापना की गयी है जैसे – जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में सोसाइटी फार साइन्टिफिक वैल्यू है। सन् 1992 में भारतीय दार्शनिक शोध संस्थान के तत्वधान में एक सेमीनार आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता एन.सी.ई.आर.टी. के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. के. गोपालन ने की, जिसमें उनके द्वारा महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये गये जैसे 'मूल्य शिक्षा' के लिये एक गैर सरकारी–स्वैच्छिक राष्ट्रीय आयोग की भीघ्राति शीघ्र स्थापना की जाये, जिसमें शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग, सहकारिता एवं प्रशासन विभाग इत्यादि आव यक रूप से होने चाहिये। सेमिनार में आये इन सुझावों को ध्यान में रखते हुये 'भारतीय दार्शनिक शोध संस्थान' ने मूल्य शिक्षण के लिये

xj ljdkjh&LofPNd vk;kx तथा 'राष्ट्रीय केन्द्र' की स्थापना की जिसके चेयरमैन प्रसिद्ध शिक्षाविद ik. fdjhr tk'kh मनोनीत किया गये थे।

,u.lh.bl.vkj.Vh. d f'k{kk ikB;Øe 2000 में उल्लिखित है कि भौक्षिक सुधार का प्रमुख निवेश यह है कि शिक्षा को सामाजिक व नैतिक मूल्यों के संवर्धन का एक सबल उपकरण बनाया जायें। शिक्षा में मूल्य अभिमुखीकरण हेतु अध्यापक शिक्षा हेतु निहितार्थों को सावधानी पूर्वक ज्ञात करना चाहिए। शिक्षकों के व्यक्तित्व में मधुरता, प्रियवाणी, स्वच्छता और सादगी, संवेदनशीलता, शिष्टता, निष्पक्षता, सौहार्द, आत्मविश्वास, कर्मशीलता, सहयोग, विनम्रता सहानुभूति आदि गुण होने चाहिये। अध्यापक का द्दष्टिकोण समाजपरक और प्रजातान्त्रिक होना चाहिये। यदि अध्यापक अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठा रखें और उसे पवित्र कार्य माने तो विद्यार्थी कभी नहीं भटक सकते।

‡- eY; vk/kkfjr f'k{kd if'k{k.k e dfBukb;k

हमारी वैदिक सभ्यता जो मूल्यों की धरोहर है, जिसमें आदर्शों, श्रद्धा, सेवा, आदर, आत्मानुशासन, सादा जीवन, उच्च विचार, ब्रहम्मचर्य, नैतिकता को जीवन का सत्य माना जाता है। किन्तु पा चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के अन्धानुकरण ने इन पुरातन आदर्शों को शिक्षा एवं समाज से बिल्कुल अलग कर दिया है, जिससे छात्र ही नहीं बल्कि शिक्षक भी नैतिक पतन की ओर बढ़ते जा रहे हैं।

वैश्विक परिद्दश्य में आज विश्व में अनेक प्रकार के शिक्षण संस्थान खुल गये हैं। अनेक पाश्चात्य विश्वविद्यालय भी भारतवर्श में अपनी शाखायें खोलने के लिये व्यग्र हैं और भारतीय छात्र–छात्राओं में इन संस्थाओं द्वारा प्रदत्त उपाधि धारण करने की होड़ लगी है। वर्तमान में *cl/ko dVEcdEk* तथा lo HkoUr lf[ku% का सन्देश केवल औपचारिक रूप से दिया जा रहा है लेकिन व्यवहारिक रूप में नहीं। आज हम पाश्चात्य ज्ञान तथा संस्कृत का अनुकूलन करके स्वंय को अपने पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्यों को भूलते जा रहे हैं।

ˆ- eY; vk/kkfjr f'k{kd if'k{k.k gr l>ko

उपरोक्त वि लेशण से स्पष्ट है कि वैश्विक एवं भौतिकवादी युग में मूल्यों का तीव्रगति से ह्रास हो रहा है। इसे रोकने की नितान्त आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है ।

- शिक्षण अभ्यास व सैद्धान्तिक शिक्षण से पूर्व छात्राध्यापकों को उन जीवन मूल्यों व कार्य मूल्यों से सम्बन्धित सूचना पत्रक देना, जिनके अनुरूप आचरण की उनसे आशा की जाती है।
- छात्राध्यापकों को स्वध्याय द्वारा मूल्य विषयक ज्ञान अर्जित करने का निर्देश व अवसर देना।
- समय–समय पर उन्हें अभिप्रेरित करना।
- अध्यापक शिक्षकों को आवश्यकतानुसार प्रशिक्षणार्थियों की सहायतार्थ उपलब्ध रहना चाहिये।
- शिक्षण अभ्यास इस तरह संचालित करना चाहिये कि छात्राध्यापक उसे एक तपस्या मानकर तन्मय होकर करें व स्वंय अपनी शिक्षण प्रवीणता सुधारने में रूचि लें।
- समाजपयोगी उत्पादन कार्य को सम्पूर्ण अध्यापक प्रशिक्षण का अभिन्न अंग मानना चाहिये व इसे वास्तव में मूल्य अभिविन्यासित बनाने के लिये उस भावना पर बल देना चाहिये, जिसके साथ कार्य किये जाने हैं।
- प्रतिदिन शिक्षण पूर्व अनिवार्य रूप से प्रार्थना सभा होनी चाहिये, जो सभी धर्मों की मूलभूत समानताओं पर आधारित हो।
- विशिष्ट राष्ट्रीय पर्वों, त्यौहारों, उत्सवों व महापुरूशों के जन्म दिवस आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिये।
- प्रशिक्षणार्थियों को नई विश्व व सामाजिक व्यवस्था के लिये आवश्यक मूल्यों से सम्बन्धित विशयों व प्रकरणों के चयन हेतु प्रोत्साहित करना चाहिये।

- समय–समय पर अभिविन्यास एवं पुर्नश्चर्या कार्यक्रम आयोजित होते रहने चाहिये, जिससे भावी शिक्षकों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हो रहे नवाचारों से परिचित कराया जा सके।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम एक वर्शीय न होकर द्विवर्शीय कर देना चाहिये, जिससे प्रशिक्षणार्थियों के कार्य व्यवहार में रचनात्मक मौलिकता आ सके।
- 'मूल्य शिक्षा' जो कि पिछले कछु वर्शों से शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का हिस्सा बन चुकी है, का भी अनवरत मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि अपेक्षित परिणाम सामने आ सके। इसलिए नवीन चेकलिस्टों तथा रेटिंग स्केलों का निर्माण एवं प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि मूल्यों की द्दश्टि से प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहार का मूल्यांकन कर सकें।

वर्तमान परिद्दश्य को देखते हुये शिक्षक प्रशिक्षण क्षेत्र में मूल्य शिक्षा की महती आवश्यकता है। समय तीव्र गति के साथ मानव की भौतिक जगत् की उड़ान व ऊचाइयाँ छू रहा हैं, परन्तु उनकी आंतरिक शक्तियां! विस्मृत के गर्भ में जा रही हैं। अतः आज का मानव दिशाशून्य बनता जा रहा है। अतः वर्तमान समाज में मूल्यों का ह्रास हमारी शिक्षा के लिए एक गम्भीर चुनौती है क्योंकि हिरोशिमा बम विस्फोट से ज्यादा विस्फोटक 'न्यूक्लीयर बम' ने मनुष्य को विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया है। ऐसे में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ गयी है। शिक्षा द्वारा विज्ञान एवं मानवतावाद का बन्धन, ज्ञान और बुद्धि का बन्धन दूर करना है नहीं तो वह दिन दूर नही जब लागे विशेषज्ञ तो होगें किन्तु मानव नहीं होगें।

अतः मूल्यपरक शिक्षक प्रशिक्षण एक ऐसा आयाम है जो देश" के भावी कर्णधारों में सर्वांगीण विकास अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के अनुसार कर सकेगा और जिससे देश" को फिर से विश्व" गुरू बनाने में सहायता मिल सकेगी।

lUnHk xzUFk

1. उपध्याय, प्रतिभा (2003).भारतीय शिक्षा में उदयीमान प्रवृत्तियां, शारदा पुस्त्क भवन, इलाहाबाद।
2. सोनी, राम गोपाल (2007–2008). अध्यापक शिक्षा, एच. पी.भार्गव बुक हाउस, आगरा।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986). मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार (शिक्षा विभाग) नई दिल्ली ।
4. पाण्डेय, आर.एस. (2001). भारतीय शिक्षा के विभिन्न आयाम, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा।
5. पाण्डेय, रामशक्ल व मिश्र करूणाशंकर 2008). मूल्य शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
6. भार्गव, महेश (2007). शैक्षिक सरोवर, राखी प्रकाशन, आगरा।
7. सिंह, रघुराज व यादव, रामबली (2007). वैश्वीकरण एवं उच्च शिक्षा की सम्भावनाएँ, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. शर्मा, आर. ए. व चतुर्वेदी, शिखा (2008).अध्यापक प्रशिक्षण तकनीकी, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।